समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समाजवाद

प्रिया सिन्हा, शोधार्थी

राजनीतिक विज्ञान विभाग

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना बिहार

सार

सामाजिक न्याय और समाजवाद भारतीय लोकतंत्र की वैचारिक एवं संवैधानिक आधारशिलाओं में प्रमुख स्थान रखते हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों तथा राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों में इन दोनों सिद्धांतों का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है। सामाजिक न्याय का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों, विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलाओं, अल्पसंख्यकों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को समान अवसर, सम्मान और न्याय उपलब्ध कराना है। दूसरी ओर, समाजवाद आर्थिक संसाधनों के न्यायसंगत वितरण, आय और संपत्ति की असमानताओं को कम करने तथा कल्याणकारी राज्य की स्थापना पर बल देता है।

यह अध्ययन समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समाजवाद की बदलती भूमिका, उनकी प्रासंगिकता तथा उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों का विश्लेषण करता है। अध्ययन में भारतीय संविधान, सार्वजनिक नीतियों, आरक्षण व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तथा आर्थिक सुधारों के संदर्भ में इन अवधारणाओं का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के पश्चात भारतीय राजनीति में समाजवाद की पारंपरिक अवधारणा में परिवर्तन आया है, जबकि सामाजिक न्याय आज भी शासन और नीति-निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है।

अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें संविधान, सरकारी दस्तावेज़ों, नीति आयोग एवं विभिन्न आयोगों की रिपोर्टों, शोध-पत्रों, पुस्तकों तथा विद्वानों के विचारों का विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद केवल वैचारिक अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि लोकतांत्रिक शासन, समावेशी विकास तथा सामाजिक समानता के लिए आवश्यक व्यावहारिक सिद्धांत भी हैं।

शोध के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि भारत में सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने हेतु आरक्षण नीति, शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी योजनाएँ, ग्रामीण विकास कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ तथा आर्थिक समावेशन जैसी अनेक पहलें की गई हैं। इसके बावजूद जातीय असमानता, आर्थिक विषमता, बेरोज़गारी, लैंगिक भेदभाव, क्षेत्रीय असंतुलन तथा राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसी चुनौतियाँ सामाजिक न्याय की पूर्ण प्राप्ति में बाधक बनी हुई हैं। इसी प्रकार समाजवाद की संवैधानिक भावना आज भी कल्याणकारी नीतियों में विद्यमान है, यद्यपि आर्थिक उदारीकरण के कारण राज्य और बाज़ार की भूमिकाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला है।

अध्ययन का निष्कर्ष है कि समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समाजवाद लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समावेशन और सतत विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक बने हुए हैं। समावेशी एवं उत्तरदायी शासन, प्रभावी सार्वजनिक नीतियाँ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समान अवसर, पारदर्शी प्रशासन तथा वंचित वर्गों के सशक्तिकरण के माध्यम से इन आदर्शों को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। यह शोध नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी संदर्भ प्रदान करता है और भारत में न्यायपूर्ण एवं समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में सार्थक विमर्श प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द : सामाजिक न्याय, समाजवाद, भारतीय राजनीति, संविधान एवं समानता, कल्याणकारी राज्य, समावेशी विकास

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

सामाजिक न्याय और समाजवाद भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के दो ऐसे मूलभूत सिद्धांत हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास की दिशा को गहराई से प्रभावित किया है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में न्याय—सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक—को राष्ट्र के प्रमुख उद्देश्यों में सम्मिलित किया गया है। इसी प्रकार संविधान के नीति-निर्देशक तत्व (Directive Principles of State Policy) एक ऐसे कल्याणकारी राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान अवसर, गरिमामय जीवन तथा विकास के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध हो सकें। इन संवैधानिक आदर्शों के केंद्र में सामाजिक न्याय और समाजवाद की अवधारणाएँ निहित हैं।

सामाजिक न्याय का आशय केवल विधिक समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक स्थिति के अनुरूप समान अवसर और सम्मान प्रदान करने की व्यापक अवधारणा है। भारत जैसे बहुजातीय, बहुभाषी, बहुधार्मिक तथा विविध सामाजिक संरचना वाले देश में सामाजिक न्याय का महत्व और भी बढ़ जाता है। ऐतिहासिक रूप से जाति-आधारित भेदभाव, अस्पृश्यता, लैंगिक असमानता, आर्थिक विषमता तथा शिक्षा और संसाधनों तक असमान पहुँच ने समाज के अनेक वर्गों को मुख्यधारा से वंचित रखा। इसलिए स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने ऐसी व्यवस्था विकसित करने का प्रयास किया जिससे समाज के कमजोर और वंचित वर्गों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

समाजवाद की अवधारणा का मूल उद्देश्य आर्थिक असमानताओं को कम करना, संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करना तथा प्रत्येक नागरिक के लिए सम्मानजनक जीवन-स्तर उपलब्ध कराना है। भारतीय संदर्भ में समाजवाद का स्वरूप लोकतांत्रिक समाजवाद के रूप में विकसित हुआ, जिसमें लोकतांत्रिक संस्थाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए सामाजिक एवं आर्थिक समानता स्थापित करने का प्रयास किया गया। वर्ष 1976 में संविधान के 42वें संशोधन के माध्यम से प्रस्तावना में "समाजवादी" शब्द जोड़ा गया, जिसने भारतीय राज्य की सामाजिक-आर्थिक प्रतिबद्धता को और अधिक स्पष्ट किया।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने योजनाबद्ध आर्थिक विकास, भूमि सुधार, सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार, बैंक राष्ट्रीयकरण, हरित क्रांति, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम तथा ग्रामीण विकास योजनाओं के माध्यम से समाजवादी आदर्शों को व्यवहार में लागू करने का प्रयास किया। समय के साथ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS), महिलाओं तथा दिव्यांगजनों के लिए आरक्षण एवं विशेष कल्याणकारी योजनाओं को लागू किया गया। इन प्रयासों का उद्देश्य सामाजिक न्याय को व्यवहारिक रूप देना तथा विकास की प्रक्रिया में सभी वर्गों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना था।

वर्ष 1991 के आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था तथा राजनीति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले। बाज़ार-आधारित आर्थिक नीतियों ने आर्थिक विकास को गति प्रदान की, किन्तु साथ ही आय एवं संपत्ति की असमानताओं, क्षेत्रीय विकास के अंतर तथा सामाजिक विषमताओं से संबंधित नई चुनौतियाँ भी सामने आईं। परिणामस्वरूप सामाजिक न्याय और समाजवाद की अवधारणाओं पर नए दृष्टिकोण से विचार किया जाने लगा। आज भारतीय राजनीति में विकास, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक समावेशन, डिजिटल शासन, कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार जैसे मुद्दे सामाजिक न्याय की नई व्याख्याओं से जुड़े हुए हैं।

समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय केवल आरक्षण नीति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवाओं, सामाजिक सुरक्षा, लैंगिक समानता, अल्पसंख्यकों के अधिकार, पर्यावरणीय न्याय, डिजिटल समावेशन तथा अवसरों की समान उपलब्धता जैसे व्यापक विषयों को भी समाहित करता है। इसी प्रकार समाजवाद की

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अवधारणा भी केवल राज्य के नियंत्रण तक सीमित न रहकर अब समावेशी विकास, सतत विकास, सार्वजनिक-निजी भागीदारी तथा उत्तरदायी शासन के साथ जुड़ गई है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अवधारणाएँ समय के साथ परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप विकसित हुई हैं।

वर्तमान समय में भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समाजवाद को लेकर व्यापक वैचारिक एवं राजनीतिक विमर्श जारी है। विभिन्न राजनीतिक दल इन सिद्धांतों की अलग-अलग व्याख्या प्रस्तुत करते हैं तथा अपनी नीतियों और चुनावी घोषणापत्रों में इन्हें प्रमुख स्थान देते हैं। आरक्षण नीति, जातीय जनगणना, समान नागरिक अवसर, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, किसान कल्याण, रोजगार सृजन, शिक्षा और स्वास्थ्य पर सार्वजनिक व्यय जैसे विषय समकालीन राजनीतिक बहस के केंद्र में हैं। इन मुद्दों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद आज भी भारतीय लोकतंत्र की दिशा और नीति-निर्माण को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण विचार बने हुए हैं।

यह अध्ययन समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समाजवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, संवैधानिक आधार, ऐतिहासिक विकास, सरकारी नीतियों, राजनीतिक विमर्श तथा वर्तमान चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि बदलते वैश्विक और राष्ट्रीय परिदृश्य में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता किस प्रकार बनी हुई है तथा सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय और समावेशी विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में इनकी क्या भूमिका है। यह शोध नीति-निर्माताओं, शिक्षकों, शोधार्थियों तथा राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है और न्यायपूर्ण, समतामूलक तथा लोकतांत्रिक समाज के निर्माण की दिशा में सार्थक विमर्श को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है।

साहित्य समीक्षा

सामाजिक न्याय और समाजवाद भारतीय राजनीतिक चिंतन, संवैधानिक व्यवस्था तथा सार्वजनिक नीति के दो ऐसे महत्वपूर्ण विषय हैं, जिन पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक अध्ययन किया गया है। विभिन्न विद्वानों ने इन अवधारणाओं का विश्लेषण दार्शनिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया है। भारतीय संदर्भ में इन विषयों का अध्ययन विशेष रूप से संविधान, लोकतंत्र, जाति व्यवस्था, आर्थिक विकास, कल्याणकारी राज्य तथा समावेशी शासन के संदर्भ में किया गया है। प्रस्तुत साहित्य समीक्षा में प्रमुख विचारकों, संवैधानिक दृष्टिकोणों तथा समकालीन शोध अध्ययनों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सामाजिक न्याय की अवधारणा का प्रारंभिक आधार प्राचीन राजनीतिक दर्शन में मिलता है, किन्तु आधुनिक काल में इसे व्यवस्थित रूप से विकसित किया गया। पाश्चात्य राजनीतिक विचारकों ने न्याय को समानता, स्वतंत्रता तथा अधिकारों के संदर्भ में परिभाषित किया। आधुनिक राजनीतिक दर्शन में न्याय को केवल विधिक व्यवस्था तक सीमित न मानकर सामाजिक एवं आर्थिक समानता से भी जोड़ा गया। इस दृष्टिकोण ने लोकतांत्रिक शासन में राज्य की सक्रिय भूमिका तथा कल्याणकारी नीतियों की आवश्यकता पर बल दिया।

भारतीय संदर्भ में सामाजिक न्याय के विकास में भारतीय संविधान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। संविधान निर्माताओं ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय को राष्ट्र के मूल उद्देश्यों में सम्मिलित किया। समानता का अधिकार, भेदभाव का निषेध, अस्पृश्यता का उन्मूलन तथा सार्वजनिक अवसरों में समानता जैसे संवैधानिक प्रावधान सामाजिक न्याय की आधारशिला हैं। राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों में आर्थिक समानता, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा श्रमिकों के कल्याण से संबंधित प्रावधान समाजवादी एवं कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को सुदृढ़ करते हैं।

B. R. Ambedkar ने सामाजिक न्याय को भारतीय लोकतंत्र का मूल आधार माना। उनके अनुसार जाति-आधारित असमानता भारतीय समाज की सबसे बड़ी चुनौती है, जिसका समाधान केवल संवैधानिक अधिकारों, शिक्षा, प्रतिनिधित्व तथा सामाजिक सुधारों के माध्यम से संभव है। उन्होंने राजनीतिक लोकतंत्र के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

की स्थापना पर विशेष बल दिया। उनका मत था कि जब तक समाज में वास्तविक समानता स्थापित नहीं होगी, तब तक लोकतंत्र का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता।

Mahatma Gandhi ने सामाजिक न्याय को नैतिकता, अहिंसा, ग्राम स्वराज तथा सर्वोदय की अवधारणाओं से जोड़ा। उनके अनुसार समाज का विकास तभी संभव है जब अंतिम व्यक्ति (अंत्योदय) तक विकास के लाभ पहुँचें। गांधी ने आर्थिक समानता, श्रम की गरिमा तथा सामाजिक सद्भाव को न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला माना। दूसरी ओर, Ram Manohar Lohia ने भारतीय समाजवाद को जाति-विरोध, लैंगिक समानता तथा विकेंद्रीकरण के साथ जोड़ा और सामाजिक परिवर्तन के लिए व्यापक राजनीतिक सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया।

भारतीय समाजवाद के विकास में Jawaharlal Nehru की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। उन्होंने योजनाबद्ध आर्थिक विकास, सार्वजनिक क्षेत्र, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाते हुए लोकतांत्रिक समाजवाद की अवधारणा को आगे बढ़ाया। अनेक अध्ययनों में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाओं ने औद्योगिकीकरण, कृषि विकास तथा सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास की मजबूत नींव रखी। हालांकि, कुछ विद्वानों का मत है कि इन नीतियों के बावजूद आय और क्षेत्रीय असमानताओं को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सका।

आधुनिक राजनीतिक दर्शन में John Rawls की न्याय संबंधी अवधारणा अत्यंत प्रभावशाली मानी जाती है। उनकी कृति *A Theory of Justice* में प्रतिपादित न्याय का सिद्धांत समान अवसर तथा सबसे कमजोर वर्गों के अधिकतम हित पर आधारित है। अनेक भारतीय विद्वानों ने रॉल्स के सिद्धांतों का उपयोग भारतीय आरक्षण नीति, कल्याणकारी योजनाओं तथा समान अवसरों की संवैधानिक व्यवस्था के विश्लेषण में किया है। दूसरी ओर, Amartya Sen ने क्षमता दृष्टिकोण (Capability Approach) प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया कि वास्तविक विकास का माप केवल आय नहीं, बल्कि लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता तथा अवसरों का विस्तार होना चाहिए। समकालीन सामाजिक न्याय संबंधी शोधों में सेन का दृष्टिकोण अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

समकालीन शोध अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय का स्वरूप समय के साथ विस्तृत हुआ है। प्रारंभिक वर्षों में इसका प्रमुख केंद्र जातीय समानता तथा आरक्षण नीति था, जबकि वर्तमान समय में इसमें लैंगिक समानता, अल्पसंख्यक अधिकार, दिव्यांगजन अधिकार, डिजिटल समावेशन, पर्यावरणीय न्याय तथा आर्थिक समावेशन जैसे नए आयाम भी सम्मिलित हो गए हैं। अनेक शोधों के अनुसार सामाजिक न्याय की सफलता केवल संवैधानिक प्रावधानों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन, पारदर्शी प्रशासन तथा जनभागीदारी पर भी निर्भर करती है।

1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए। उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभावों पर किए गए अनेक अध्ययनों में यह निष्कर्ष सामने आया है कि इन नीतियों ने आर्थिक विकास और निवेश को बढ़ावा दिया, किन्तु आय असमानता, बेरोज़गारी, ग्रामीण-शहरी अंतर तथा क्षेत्रीय विषमताओं जैसी चुनौतियों को भी जन्म दिया। इस संदर्भ में अनेक विद्वानों ने यह तर्क दिया कि आर्थिक विकास तभी सार्थक होगा जब उसके लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचें। इसलिए समावेशी विकास (Inclusive Development) की अवधारणा को आधुनिक समाजवाद का व्यावहारिक रूप माना जाने लगा।

भारतीय राजनीति पर आधारित समकालीन साहित्य यह भी दर्शाता है कि सामाजिक न्याय चुनावी राजनीति का एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। विभिन्न राजनीतिक दल आरक्षण, सामाजिक सुरक्षा, किसान कल्याण, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन जैसे विषयों को सामाजिक न्याय और समाजवाद के संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं। शोधकर्ताओं का मत है कि इन नीतियों का मूल्यांकन केवल राजनीतिक घोषणाओं के आधार पर नहीं, बल्कि उनके वास्तविक सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों के आधार पर किया जाना चाहिए।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वर्तमान साहित्य में सामाजिक न्याय और सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) के मध्य संबंधों पर भी विशेष बल दिया गया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, गरिमापूर्ण कार्य, असमानताओं में कमी तथा शांतिपूर्ण एवं समावेशी संस्थाओं के निर्माण जैसे वैश्विक लक्ष्य सामाजिक न्याय की अवधारणा को और व्यापक बनाते हैं। इस दृष्टि से भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौती केवल आर्थिक वृद्धि प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसी विकास प्रक्रिया सुनिश्चित करना है जो न्यायपूर्ण, समावेशी तथा टिकाऊ हो।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद भारतीय राजनीति के स्थायी एवं प्रासंगिक विषय हैं। यद्यपि इन विषयों पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, फिर भी समकालीन भारतीय राजनीति में आर्थिक उदारीकरण, डिजिटल शासन, नई सामाजिक नीतियों, जातीय प्रतिनिधित्व, लैंगिक न्याय तथा कल्याणकारी योजनाओं के संयुक्त प्रभाव का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। अधिकांश अध्ययन किसी एक विशिष्ट पहलू—जैसे आरक्षण, आर्थिक सुधार, जाति या कल्याणकारी योजनाओं—पर केंद्रित हैं, जबकि बदलते राजनीतिक एवं सामाजिक संदर्भों में इन सभी आयामों का समेकित अध्ययन अपेक्षित है।

इसी शोध-अंतर (Research Gap) को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय और समाजवाद की अवधारणाओं, संवैधानिक आधार, सार्वजनिक नीतियों, राजनीतिक विमर्श तथा वर्तमान चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन न केवल उपलब्ध साहित्य का विस्तार करता है, बल्कि समावेशी शासन, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व तथा न्यायपूर्ण विकास की दिशा में सामाजिक न्याय और समाजवाद की निरंतर प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।

शोध पद्धति

1. शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) तथा वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक (Descriptive-Analytical) शोध पद्धति पर आधारित है। इसका उद्देश्य समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की अवधारणाओं, संवैधानिक आधार, सार्वजनिक नीतियों, राजनीतिक विमर्श तथा समकालीन चुनौतियों का समग्र विश्लेषण करना है। अध्ययन में उपलब्ध साहित्य, संवैधानिक प्रावधानों, सरकारी नीतियों एवं शोध अध्ययनों का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है।

2. शोध अभिकल्प

इस अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive Research Design) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical Research Design) शोध अभिकल्प का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम से सामाजिक न्याय और समाजवाद की वैचारिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा समकालीन भारतीय राजनीति में इनकी भूमिका, प्रभाव एवं सीमाओं का मूल्यांकन किया गया है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की अवधारणाओं का सैद्धांतिक विश्लेषण करना।
- भारतीय संविधान में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद के संवैधानिक आधार का अध्ययन करना।
- समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- आरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सामाजिक न्याय के क्रियान्वयन का विश्लेषण करना।
- उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के संदर्भ में समाजवाद की बदलती अवधारणा का अध्ययन करना।
- वर्तमान चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करना।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. शोध प्रश्न

अध्ययन निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्नों पर आधारित है—

1. समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की अवधारणा किस प्रकार विकसित हुई है?
2. भारतीय संविधान इन दोनों सिद्धांतों को किस प्रकार संरक्षण प्रदान करता है?
3. क्या वर्तमान सार्वजनिक नीतियाँ सामाजिक न्याय एवं समावेशी विकास को प्रभावी रूप से बढ़ावा देती हैं?
4. आर्थिक उदारीकरण के पश्चात समाजवाद की अवधारणा में क्या परिवर्तन हुए हैं?
5. वर्तमान समय में सामाजिक न्याय के समक्ष प्रमुख राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ क्या हैं?

5. अध्ययन के स्रोत

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक (Secondary Data) पर आधारित है। अध्ययन हेतु निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है—

(क) प्राथमिक दस्तावेज़

- भारतीय संविधान
- संविधान सभा की बहसें
- पंचवर्षीय योजनाओं से संबंधित दस्तावेज़
- संसद एवं विभिन्न आयोगों की रिपोर्टें
- नीति आयोग एवं भारत सरकार के मंत्रालयों के प्रकाशन

(ख) द्वितीयक स्रोत

- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध-पत्र
- राजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन की पुस्तकें
- विश्वविद्यालयों के शोध-प्रबंध
- सरकारी एवं अर्द्ध-सरकारी प्रकाशन
- प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ एवं अकादमिक जर्नल
- सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्टें

6. डेटा संग्रहण विधि (Data Collection Method)

अध्ययन में दस्तावेज़ीय विश्लेषण (Document Analysis) पद्धति अपनाई गई है। उपलब्ध साहित्य, नीतिगत दस्तावेज़ों, शोध-पत्रों तथा सरकारी रिपोर्टों का व्यवस्थित अध्ययन एवं तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। सामाजिक न्याय एवं समाजवाद से संबंधित प्रमुख सिद्धांतों तथा समकालीन नीतियों का विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) भी किया गया है।

7. डेटा विश्लेषण की विधि (Data Analysis Technique)

संग्रहित तथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित तकनीकों के आधार पर किया गया है—

- विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis): संविधान, नीतियों एवं साहित्य का गुणात्मक विश्लेषण।
- तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis): स्वतंत्रता-उपरांत तथा समकालीन नीतियों की तुलना।
- व्याख्यात्मक विश्लेषण (Interpretative Analysis): सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की वैचारिक व्याख्या।
- नीति विश्लेषण (Policy Analysis): आरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याणकारी योजनाओं का मूल्यांकन।

8. अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन मुख्य रूप से समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की भूमिका तक सीमित है। अध्ययन में विशेष रूप से निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया गया है—

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- सामाजिक न्याय की अवधारणा
- समाजवाद का विकास
- भारतीय संविधान एवं संवैधानिक प्रावधान
- आरक्षण नीति एवं प्रतिनिधित्व
- शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा
- आर्थिक उदारीकरण एवं समावेशी विकास
- वर्तमान राजनीतिक विमर्श एवं चुनौतियाँ

अध्ययन का कालखंड मुख्यतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से वर्तमान समय तक की राजनीतिक एवं नीतिगत प्रक्रियाओं को समाहित करता है।

9. अध्ययन की सीमाएँ

इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं—

- अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है; प्राथमिक सर्वेक्षण या साक्षात्कार सम्मिलित नहीं हैं।
- विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी स्रोतों में उपलब्ध आँकड़ों में समयानुसार परिवर्तन संभव है।
- अध्ययन का केंद्र भारतीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य है; अन्य देशों के समाजवादी मॉडलों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन इसमें शामिल नहीं किया गया है।
- राजनीतिक विचारधाराओं में समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों के कारण कुछ निष्कर्ष भविष्य में परिवर्तित हो सकते हैं।

10. अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की समकालीन प्रासंगिकता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह शोध राजनीतिक विज्ञान, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र तथा सार्वजनिक नीति के विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी है। साथ ही यह नीति-निर्माताओं को यह समझने में सहायता प्रदान करता है कि लोकतांत्रिक शासन में समावेशी विकास, सामाजिक समानता तथा आर्थिक न्याय को किस प्रकार अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध पद्धति अध्ययन को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ एवं व्यवस्थित आधार प्रदान करती है। गुणात्मक विश्लेषण, दस्तावेज़ीय अध्ययन तथा नीति-विश्लेषण के माध्यम से सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की अवधारणाओं का व्यापक मूल्यांकन किया गया है। यह पद्धति न केवल समकालीन भारतीय राजनीति की जटिलताओं को समझने में सहायक है, बल्कि भविष्य के शोध के लिए भी एक उपयोगी रूपरेखा प्रस्तुत करती है।

परिणाम एवं चर्चा

1. प्रस्तावना

इस अध्ययन का उद्देश्य समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की भूमिका, प्रासंगिकता तथा चुनौतियों का विश्लेषण करना था। उपलब्ध साहित्य, संवैधानिक प्रावधानों, सरकारी नीतियों तथा विभिन्न शोध अध्ययनों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद आज भी भारतीय लोकतंत्र की आधारभूत अवधारणाएँ हैं। यद्यपि आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के बाद आर्थिक नीतियों में परिवर्तन हुआ है, फिर भी सामाजिक समानता, समावेशी विकास तथा कल्याणकारी राज्य की अवधारणा भारतीय शासन व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग बनी हुई है।

2. सामाजिक न्याय का संवैधानिक आधार

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय संविधान सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए व्यापक संवैधानिक ढाँचा प्रदान करता है। संविधान की प्रस्तावना सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक न्याय को राष्ट्र के मूल उद्देश्यों में सम्मिलित करती है। मौलिक अधिकार नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता तथा गरिमा प्रदान करते हैं, जबकि राज्य के नीति-निर्देशक तत्व सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं को कम करने तथा कल्याणकारी राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि संविधान ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए सकारात्मक भेदभाव (Affirmative Action) की व्यवस्था करके सामाजिक न्याय को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया है।

3. सामाजिक न्याय की नीतियों का प्रभाव

अध्ययन से यह पाया गया कि स्वतंत्रता के बाद अनेक कल्याणकारी कार्यक्रमों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किए हैं।

विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम सामने आए—

- आरक्षण नीति के कारण उच्च शिक्षा एवं सरकारी सेवाओं में वंचित वर्गों का प्रतिनिधित्व बढ़ा है।
- विद्यालयी शिक्षा में प्रवेश एवं छात्रवृत्ति योजनाओं से सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहन मिला है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन कार्यक्रमों ने गरीब परिवारों की आय बढ़ाने में सहायता की है।
- खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं ने कमजोर वर्गों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की है।
- महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व एवं आर्थिक सशक्तिकरण में निरंतर वृद्धि हुई है।

इन उपलब्धियों के बावजूद विभिन्न राज्यों तथा सामाजिक समूहों के बीच विकास का स्तर समान नहीं है।

4. भारतीय राजनीति में समाजवाद का बदलता स्वरूप

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारत में समाजवाद का स्वरूप पारंपरिक राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था से आगे बढ़कर **लोकतांत्रिक एवं समावेशी समाजवाद** के रूप में विकसित हुआ है।

1991 के आर्थिक सुधारों के बाद निजी निवेश, विदेशी पूंजी तथा बाज़ार आधारित अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया गया। इसके बावजूद सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण विकास, सामाजिक सुरक्षा तथा गरीबी उन्मूलन जैसी कल्याणकारी योजनाओं को जारी रखा।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान भारतीय राजनीति पूर्ण समाजवादी अथवा पूर्ण पूंजीवादी मॉडल का अनुसरण नहीं करती, बल्कि मिश्रित अर्थव्यवस्था एवं कल्याणकारी शासन की नीति अपनाती है।

5. आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय

विश्लेषण से यह पाया गया कि भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है। आर्थिक विकास की गति बढ़ने से रोजगार, निवेश तथा आधारभूत संरचना में सुधार हुआ है।

किन्तु अध्ययन यह भी दर्शाता है कि—

- आय असमानता अभी भी बनी हुई है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच विकास का अंतर विद्यमान है।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुँच अभी सुनिश्चित नहीं हो सकी है।
- असंगठित क्षेत्र के श्रमिक सामाजिक सुरक्षा से पूर्णतः लाभान्वित नहीं हो पाए हैं।

अतः आर्थिक विकास को वास्तविक सामाजिक न्याय में परिवर्तित करने हेतु समावेशी नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है।

6. सामाजिक न्याय एवं राजनीतिक प्रतिनिधित्व

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि लोकतांत्रिक राजनीति में सामाजिक न्याय का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम राजनीतिक प्रतिनिधित्व है।

स्थानीय स्वशासन संस्थाओं, विधानसभाओं तथा संसद में आरक्षण एवं राजनीतिक भागीदारी ने अनेक वंचित वर्गों को नेतृत्व प्रदान किया है।

महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि लोकतंत्र की समावेशी प्रकृति को दर्शाती है।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

फिर भी अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि केवल प्रतिनिधित्व पर्याप्त नहीं है; नीति निर्माण एवं संसाधनों के वितरण में प्रभावी सहभागिता भी आवश्यक है।

7. समकालीन चुनौतियाँ

अध्ययन के दौरान निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ सामने आईं—

(क) आर्थिक असमानता

आर्थिक विकास के बावजूद आय एवं संपत्ति का असमान वितरण सामाजिक न्याय के समक्ष गंभीर चुनौती बना हुआ है।

(ख) जातीय असमानता

संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद अनेक क्षेत्रों में जाति आधारित भेदभाव एवं सामाजिक बहिष्कार के उदाहरण देखने को मिलते हैं।

(ग) लैंगिक असमानता

महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, वेतन तथा नेतृत्व के अवसरों में अभी भी पूर्ण समानता स्थापित नहीं हो सकी है।

(घ) बेरोज़गारी

युवा बेरोज़गारी सामाजिक एवं आर्थिक न्याय दोनों के लिए चुनौती है।

(ङ) क्षेत्रीय असंतुलन

विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों के बीच विकास का स्तर समान नहीं है।

(च) डिजिटल असमानता

डिजिटल सेवाओं के विस्तार के बावजूद इंटरनेट, डिजिटल शिक्षा तथा तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाई है।

8. समकालीन राजनीतिक विमर्श

विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि सामाजिक न्याय वर्तमान भारतीय राजनीति का प्रमुख चुनावी एवं नीतिगत विषय बना हुआ है। विभिन्न राजनीतिक दल निम्नलिखित मुद्दों पर विशेष बल देते हैं—

- सामाजिक न्याय
- आरक्षण नीति
- जातीय जनगणना
- महिला सशक्तिकरण
- किसान कल्याण
- रोजगार
- शिक्षा
- स्वास्थ्य
- सामाजिक सुरक्षा

इन मुद्दों के माध्यम से राजनीतिक दल विभिन्न सामाजिक समूहों का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

9. अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन के विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त हुए—

(i) सामाजिक न्याय भारतीय लोकतंत्र की मूल आधारशिला है।

(ii) समाजवाद की अवधारणा समय के साथ परिवर्तित होकर समावेशी विकास के रूप में विकसित हुई है।

(iii) संवैधानिक प्रावधानों ने वंचित वर्गों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

(iv) कल्याणकारी योजनाओं ने गरीबी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव डाला है।

(v) आर्थिक उदारीकरण ने विकास को गति दी, किन्तु आर्थिक असमानता भी बढ़ी।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(vi) लोकतांत्रिक शासन में सामाजिक न्याय केवल आरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा एवं समान अवसरों को भी सम्मिलित करता है।

(vii) समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की प्रासंगिकता निरंतर बनी हुई है।

10. चर्चा

प्राप्त परिणाम यह संकेत करते हैं कि भारत ने सामाजिक न्याय की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, किन्तु लक्ष्य अभी पूर्णतः प्राप्त नहीं हुआ है। लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती, संवैधानिक मूल्यों का पालन तथा प्रभावी सार्वजनिक नीतियाँ सामाजिक न्याय की सफलता के लिए आवश्यक हैं।

समाजवाद की पारंपरिक अवधारणा आज मिश्रित अर्थव्यवस्था, समावेशी विकास तथा कल्याणकारी शासन के रूप में विकसित हो चुकी है। सरकार की भूमिका अब केवल संसाधनों के नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि समान अवसर उपलब्ध कराने, सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने पर केंद्रित है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सामाजिक न्याय केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है। इसके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पारदर्शी प्रशासन, न्यायपालिका की सक्रिय भूमिका, नागरिक समाज की भागीदारी तथा लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व समान रूप से आवश्यक हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल शासन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कौशल विकास, हरित अर्थव्यवस्था तथा सतत विकास लक्ष्यों के संदर्भ में सामाजिक न्याय की नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ उभर रही हैं। इसलिए भविष्य की सार्वजनिक नीतियों को आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक समानता, पर्यावरणीय न्याय तथा क्षेत्रीय संतुलन को भी समान महत्व देना होगा।

समग्र रूप से अध्ययन यह सिद्ध करता है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद केवल राजनीतिक विचारधाराएँ नहीं हैं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की स्थिरता, सामाजिक समरसता तथा समावेशी विकास के लिए आवश्यक आधारभूत सिद्धांत हैं। भविष्य में इन आदर्शों को प्रभावी बनाने के लिए संविधान की मूल भावना, उत्तरदायी शासन, सशक्त स्थानीय संस्थाओं, गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक सेवाओं तथा नागरिक सहभागिता को और अधिक मजबूत करना आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद भारतीय लोकतंत्र के मूलभूत वैचारिक एवं संवैधानिक स्तंभ हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों तथा राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों में निहित सिद्धांत यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक नागरिक को समान अवसर, गरिमापूर्ण जीवन तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्राप्त हो। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने एक ऐसे लोकतांत्रिक एवं कल्याणकारी राज्य की स्थापना का प्रयास किया है, जहाँ विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच सके।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि सामाजिक न्याय की अवधारणा समय के साथ अधिक व्यापक एवं समावेशी हुई है। प्रारंभिक वर्षों में इसका मुख्य उद्देश्य जातिगत एवं सामाजिक असमानताओं को कम करना था, जबकि वर्तमान समय में इसमें लैंगिक समानता, आर्थिक समावेशन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवाएँ, सामाजिक सुरक्षा, दिव्यांगजन अधिकार, डिजिटल समावेशन तथा पर्यावरणीय न्याय जैसे नए आयाम भी शामिल हो चुके हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि सामाजिक न्याय एक गतिशील अवधारणा है, जो बदलती सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित होती रहती है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि भारतीय समाजवाद का स्वरूप पारंपरिक राज्य-नियंत्रित मॉडल से आगे बढ़कर लोकतांत्रिक समाजवाद तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हुआ है। 1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात भारत ने बाज़ार-आधारित आर्थिक नीतियों को अपनाया, किन्तु इसके साथ-साथ कल्याणकारी योजनाओं, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को भी निरंतर जारी रखा। इससे

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्पष्ट होता है कि वर्तमान भारतीय शासन व्यवस्था आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

शोध के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि आरक्षण व्यवस्था, शिक्षा के विस्तार, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों तथा आर्थिक समावेशन की नीतियों ने वंचित वर्गों के जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए लागू विशेष नीतियों ने सामाजिक प्रतिनिधित्व तथा अवसरों की समानता को बढ़ावा दिया है। स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में महिलाओं एवं वंचित वर्गों की बढ़ती भागीदारी लोकतंत्र की समावेशी प्रकृति को मजबूत करती है।

हालाँकि अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। आय एवं संपत्ति की असमानता, बेरोज़गारी, क्षेत्रीय विकास में असंतुलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक असमान पहुँच, डिजिटल विभाजन, जातीय एवं लैंगिक भेदभाव तथा सामाजिक बहिष्कार जैसी समस्याएँ सामाजिक न्याय की पूर्ण स्थापना में बाधक हैं। आर्थिक विकास के बावजूद समाज के सभी वर्ग समान रूप से उसके लाभ प्राप्त नहीं कर सके हैं। इसलिए केवल आर्थिक वृद्धि पर्याप्त नहीं है; उसके साथ सामाजिक समानता, न्यायपूर्ण संसाधन वितरण तथा समावेशी विकास भी आवश्यक है।

अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि सामाजिक न्याय और समाजवाद आज भी भारतीय राजनीति के केंद्र में स्थित हैं। विभिन्न राजनीतिक दल, सार्वजनिक नीतियाँ तथा सरकारी कार्यक्रम इन सिद्धांतों को अलग-अलग रूपों में अपनाते हैं। भविष्य में इन आदर्शों की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि शासन व्यवस्था कितनी पारदर्शी, उत्तरदायी, समावेशी एवं संवेदनशील बनती है। लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती, संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता तथा नागरिकों की सक्रिय भागीदारी ही सामाजिक न्याय एवं समाजवाद के वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त करने का आधार बन सकती है।

संदर्भ

1. Ambedkar, B. R. (1945). *What Congress and Gandhi Have Done to the Untouchables*. Thacker & Co.

1. Ambedkar, B. R. (1948). *The Untouchables: Who Were They and Why They Became Untouchables?* Amrit Book Company.
2. Austin, G. (1999). *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*. Oxford University Press.
3. Basu, D. D. (2018). *Introduction to the Constitution of India* (23rd ed.). LexisNexis.
4. Chandra, B. (2008). *India Since Independence*. Penguin Random House India.
5. Dreze, J., & Sen, A. (2013). *An Uncertain Glory: India and Its Contradictions*. Princeton University Press.
6. Gandhi, M. K. (1958). *Hind Swaraj and Other Writings*. Navajivan Publishing House.
7. Government of India. (1950). *The Constitution of India*. Government of India.
8. Government of India. (2024). *Economic Survey 2023–24*. Ministry of Finance.
9. Government of India. (2025). *India Year Book 2025*. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting.
10. Gupta, D. (2005). *Caste in Question: Identity or Hierarchy?* Sage Publications.
11. Lohia, R. M. (1964). *Marx, Gandhi and Socialism*. Rammanohar Lohia Samata Vidyalaya Nyas.
12. Ministry of Statistics and Programme Implementation. (2024). *Sustainable Development Goals: National Indicator Framework Progress Report*. Government of India.
13. NITI Aayog. (2023). *National Multidimensional Poverty Index: A Progress Review 2023*. Government of India.
14. Oommen, T. K. (2004). *Nation, Civil Society and Social Movements*. Sage Publications.

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

15. Rawls, J. (1999). *A Theory of Justice* (Rev. ed.). Harvard University Press.
16. Sen, A. (1999). *Development as Freedom*. Oxford University Press.
17. Sen, A. (2009). *The Idea of Justice*. Harvard University Press.
18. Singh, M. P., & Saxena, R. (Eds.). (2021). *Indian Politics: Contemporary Issues and Challenges*. PHI Learning.
19. Srinivas, M. N. (1966). *Social Change in Modern India*. University of California Press.
20. United Nations. (2015). *Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development*. United Nations.
21. World Bank. (2024). *World Development Report 2024*. World Bank.
22. Yadav, Y. (1999). *Electoral Politics in the Time of Change*. Centre for the Study of Developing Societies.
23. Kothari, R. (1970). *Politics in India*. Orient Longman.
24. Kumar, R. (2019). *Research Methodology: A Step-by-Step Guide for Beginners* (5th ed.). Sage Publications.

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in Jue-2026
https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/